२. अनन्तकाल के लिए तैयारी

अनन्तकाल कीए अंतदृष्टि

मृत्यु के लिए तैयारी

अपने पिछले अध्ययन में हमने देखा कि एक व्यक्ति मृत्यु के समय क्या अनुभव करता हैं। यह एक ऐसा विषय है जिससे अधिकांश लोग बचना चाहते हैं। जे. करबी एनडरसन ने इसको सही पहचाना जब उन्होंने कहा "सारे मानवीय क्रिया–कलापों में मृत्यु सबसे अधिक व्यापक/सार्वभौमिक और जनतंत्रवादी है। यह आयु, श्रेणी, धार्मिक विशवासों या रंग की ज़रा सी भी परवाह किए बगैर किसी भी क्षण लोगों पर घात करती है।" मृत्यु की सफ़लता दर १०० प्रतीशत है, लेकिन फिर भी अधिकांश लोग इस विषय में बातचीत करना या सोचना नहीं चाहते हैं। वुडी ऐलेन के इस कथन का लोग अक्सर हवाला देते हैं, "मैं मृत्यु से भयभीत नहीं हूँ। बस मैं मौत के समय वहाँ मौजूद होना नहीं चाहता।" चाहे हम इससे कितना भी बचने की कोशिश करें, मृत्यु दूर नहीं। हम सबको बिना अपवाद के इसका सामना करना ही है। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि आपके पास कितना पैसा है या कितना इंश्योरेंस (बीमा) है। यह बस समय की बात है। हम में से कोई नहीं जानता कि हमारे लिए आगे और कितना समय है। ध्यान देने वाली बात यह है कि हालांकि हम यह जानते हैं कि हम इस से बच नहीं सकते, हम में से बहुत से इस बारे में सोचने से बचने के लिए कुछ भी करेंगें और बहुत से लोग इसके लिए तैयारी करने की कोशिश भी नही करेंगें। बौस्टन ग्लोब में एक लेख ने कुछ समय पहले उस वर्ष में मरने वाले जाने–माने लोगों की सूची तैयार की, यह कहते हुए, कि वह एक बड़ी बहुमत के साथ जुड़ने के लिए चले गए हैं। हम कह सकते हैं कि मृत्यु बहुत बड़ी निश्चितता है और वे जो मर चुके हैं भारी बहुमत में है।

एक कब्र पर इस प्रकार से लिखा था, "राह से गुज़रने वालों ठहरो, जैसे तुम अब हो वैसे ही, एक समय में मैं भी था, जैसा मैं अब हूँ वैसे तुम ज़रूर होगे, इसलिए मेरे पीछे आने के लिए अपने आपको तैयार करो~" एक व्यक्ति ने उसके नीचे गंदी सी लिखाई में लिखा, "मैं तब तक संतुष्ठ होकर तुम्हारे पीछे नहीं आ सकता हूँ जब तक यह न जानूँ कि तुम किस राह गए थे।" यह जानना ज़रूरी है कि मृत्यु पर कोई व्यक्ति कहाँ जा रहा है लेकिन जब हमें सही दिशा दिखाई जाती है तो हमें उसके लिए अपने आपको तैयार करना चाहिए।

जब हम इंग्लैण्ड में रह रहे थे तो मेरी पत्नी सैंडी और मैं उनके माता पिता को छुट्टियों में स्कॉट्लैंड ले गए। अंधेरा होने से पहले एक शाम हम होटल की तलाश कर रहे थे। हम एक काले रंग के मज़बूत लोहे के गेट के पास से गुज़रे जिसके ऊपर लिखा था 'ब्लैक बैरोनी होटल' क्योंकि हम गेट से इमारत को नहीं देख सकते थे इसलिए हमने सोचा कि जा कर उसे देखा जाए। सांझ का समय था और उस मज़बूत लोहे के गेट को देख कर हम चारों आपस में यह मज़ाक करने लगे कि हम डर के किले में जा रहे थे और शायद वह भूतिया महल होगा। सड़क पेड़ों के बीच से घूम के जा रही थी इसलिए हमें और समय मिल गया यह कलपना करने का, कि वह जगह किस प्रकार की होगी। हम सोच रहे थे कि शायद उनके पास एक पुराना सेवक होगा जिसको देख ऐसा प्रतीत होगा कि उसके पैर कब्र में लटके हैं। मैं सोच रहा था कि शायद कोई ऐसा ही भूतह चेहरा दरवाज़े पर हमारा स्वागत करेगा।

जब हम पेड़ों के बीच से निकलकर आए तो सचमुच में वह एक महल था – एक बहुत बड़ा महल जिसके पार्किंग स्थल में एक भी कार नही थी। जैसे ही हम कार से बाहर आए, एक बहुत कुबड़ा व्यक्ति हमारे पास आया। उसके पास सचमुच में एक भटकती हुई आँख भी थी। और ऊपर से, दरवाज़े के ऊपर बड़े अक्षरों में यह शब्द लिखे थे, **<u>"अपने परमेश्‍वर से मिलने के लिए तैयार हो जाओ," आमोस ४:१२</u>**, वचन में दिए गए शब्द। आगे यह और भी रोचक हो गया। जो व्यक्ति हमें दरवाज़े पर मिला उसने हमें बताया कि उस रात होटल में केवल हम लोग ही ठहरे थे, दूसरे ७५ कमरे खाली थे। पता चला कि उनके पास एक पर्यटकों की पार्टी ने आना था जिन्होंने आखारी क्षण में बुकिंग रद्द कर दी थी। उस रात सैंडी और मैं ठाठ–बाट से एक आलीशान राजसी बिस्तर पर सोए जिसमें एक बार किंग जेम्स सोए थे। (जी हाँ वही किंग जेम्स जिन्होंने किंग जेम्स बाईबिल का अनुवाद कराया था)। होटल की शोहरत के लिए यह एक दावा था। यह पलंग आरमदेह नहीं था उसके बीचोंबीच गहरा गड्ढा था। मैं निश्‍चिन्त हूँ कि यह वही गद्दा नहीं रहा होगा लेकिन ऐसा लगता था कि १६०० ई० के समय से वह वहाँ था। हमें बाद में पता चला कि दरवाज़े के ऊपर लिखा बाईबिल पद उन सैनिकों के लिए था जो उस होटल में तब ठहरे थे जब वे युद्ध में जाने का परीक्षण ले रहे थे, ताकि युद्ध में मारे जाने की स्तिथी में वह अनन्तता का सामना कर सकें। यह अच्छी बात है कि हम अभी तैयारी करें ताकि उस दिन हम अपने परमेश्‍वर से मिल सकें। वह संकेत मेरे मन में बस गया, "अपने परमेश्‍वर से मिलने के लिए तैयार हो जाओ"। इस अध्ययन में, हम मृत्यु और न्याय के लिए तैयारी की ओर देखेंगे और यह कि कैसे वह हम सब पर असर डालेंगी। हम उस समय के बारे में सोचना नहीं चाहेंगे लेकिन वचन बताता है कि हम सबको अपने जीवन के अन्त में हिसाब देना होगा जब परमेश्‍वर यह निर्धारित करेगा कि हमारा समय आ चुका है।

> 27 और जैसे मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है। (इब्रानियों ९:२७)

> 12 सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा॥ (रोमियो १४:१२)

अड़तीस साल के मेरे बाईबिल को गहराई से अध्ययन करने में मैं इस निर्णय पर पहुँचा हूँ कि परमेश्‍वर के वचन में तीन प्रकार के न्याय के बारे में बताया गया है। पहला जिसका ज़िक्र ऊपर दिए भाग में किया गया है वह तब होता है जब हम दुनिया से जाते हैं। यह न्याय इस विषय में है कि एक व्यक्ति ने अपने पाप के लिए जो क्षमा का मुफ़्त वरदान उसे मिला है उसका क्या किया है। मसीह में जो विशवासी है, उसका न्याय उसके पापों के अनुसार नहीं होगा। उसमें वह बहुत सुरक्षित है। वह लोग जिन्होंने जीवन रहते हुए अपना भरोसा क्रूस पर उद्धारकर्ता के पूरे कार्य पर रखा है उनकी आत्मा प्रभु के पास जाती है और मसीह के दूसरे आगमन पर यीशु के साथ लौटेगी। “उस वरदान से जो तुझ में है, और भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीनों के हाथ रखते समय तुझे मिला था, निश्‍चिन्त न रह।” (१ तीमुथियुस ४:१४) जब उन्होंने मसीह में विशवास किया और भरोसा रखा तो उनके मन की गहराई में कुछ हुआ – वे मृत्यु की दशा और शैतान की बंधुवाई से निकलकर अनन्तजीवन की ओर गए जो उनके लिए रखा गया है।

24 मैं तुम से सच सच कहता हूं, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है। (यूहन्ना ५:२४ – ज़ोर मैने दिया है)

जैसा हमने पिछले सप्ताह कहा, विश्वासी जन अपनी शारीरिक देह से अलग होता है परन्तु वह बिलकुल जीवित और मसीह के साथ होता है। जब यीशु आता है और रैपचर और पुनुरुत्थान होता है, तो विश्वासी को एक देह दी जाती है, एक महिमामय देह जिसके ऊपर आदम से प्राप्त पापी स्वभाव का कोई राज नहीं है। हम बाद के अध्ययन में पुनुरुत्थान हुई देह के विषय में देखेंगे कि वह क्या है।

दूसरा न्याय मसीह के लौटने पर होता है और न्याय विश्वासियों के पुरस्कार के रूप में है। इसको मसीह की न्याय की किर्सी कहते हैं। तीसरा न्याय उनके विषय में हिअ जिन्होंने परमेश्वर की मुफ़्त क्षमा की भेंट को ठुकरा दिया है। इस न्याय को महान श्वेत सिंहासन का न्याय कहा जाता है जहाँ उन सबको आग की झील में डाला जाएगा जिन्होंने स्वंय की और शैतान की सेवा के है। (प्राकाशितवाक्य २०:१३–१५) आज हम अपना अधिकांश अध्ययन इस बात पर केंद्रित करेंगे कि हम मसीही के होने के कारण मसीह के न्याय सिंहासन के लिए अपने आपको तैयार करें।

मसीह की न्याय की कुर्सी का न्याय

मसीह के दूसरे आगमन पर, पृथवी पर सारा विद्रोह समाप्त करने के बाद, वह न्याय के स्थान पर अपनी कुर्सी पर बैठेगा, जहाँ प्रभु स्वंय बैठेगा और न्याय करेगा।

22 और पिता किसी का न्याय भी नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है। (यूहन्ना ५:२२)

27 मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा। (मत्ती १६:२७)

9 इस कारण हमारे मन की उमंग यह है, कि चाहे साथ रहें, चाहे अलग रहें पर हम उसे भाते रहें।
10 क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के साम्हने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला जो उस ने देह के द्वारा किए हों पाए॥ (२ कुरिन्थियों ५:९–१०)

१) विशवासियों का यह बेमा आसन किस विषय में होगा? आप क्या समझते हैं?

यह न्याय विश्वासी के प्रतिफल के सन्दर्भ में है कि उसने किस तरह अपने समय, शक्ति, वरदानों, योज़ताओं और धन का प्रयोग किया है। युनानी शब्द बिमाटॉस का अंग्रेज़ी में अनुवाद न्याय सिंहासन किया गया है। नए नियम की सामान्य युनानी भाषा में बेमा आसन खेल प्रतिस्पर्धाओं में वह स्थान था जहाँ पर विजयता खड़े होते थे। सांसारिक व कानूनी सन्दर्भ में, बेमा शब्द का साहित्यिक अर्थ है, (उसका) "पाँव धरना"। यह ऊँचा उठा हुआ स्थान एकत्रित होने की जगह को दरशाता है। मेरा मानना है कि इस स्थान पर, अलग–अलग बातों को लेकर, हम मसीहियों का न्याय किया जाएगा। १) हमारे जीवन में आत्मा का फल कितना है आर्थात मसीह की समानत या चरित्र २) हमने अपने साधनों जैसे कि हमारा समय, शक्ति, योज़ताओं और धन का कैसे इस्तेमाल किया है?

एक लेखक और सम्मेंलन के वक्ता जॉन बेवेर अपनी पुस्तक 'ड्रिविन बाए इटरनिटी' में लिखते है:
कोई भी सीमित अंक को अपरिमित संख्या से भाग दिया जाए या तुलना की जाए तो उसका उत्तर शून्य होगा। इससे कोई फ़र्क नही पड़ता कि आप पृथ्वी पर कितने लंबे समय तक रहते हैं। यहाँ तक कि अगर आप की आयु १५० वर्ष की हो फिर भी अनन्तकाल की तुलना में विश्वासी होने के नाते जो भी कुछ हम यहाँ शून्य के समान समय में करते हैं वह तय करेगा कि हम अपना अनन्तकाल कैसे बिताएँगे। याद रखें, कि हम अनन्तकाल कहाँ बितायेंगे वह इस बात पर निर्धारित है कि हम यीशु के क्रूस और उसके बचानेवाले अनुग्रह का क्या करते हैं परन्तु हम उसके राज्य में अनन्तकाल के लिए कैसे जीयेंगे इस बात पर निर्भर है कि हम यहाँ विश्वासी के रूप में कैसे जिए।

आगे, अपने अध्ययन में हम मसीह के समान चरित्र के प्रतिफल पर और ध्यान देंगे। लेकिन अभी हम इस बात पर केन्द्रित होंगे कि हम अपने जीवन में क्या कर रहे हैं अर्थात हम अपने समय, शक्ति, वरदानो, योज़ताओं और धन का कैसे इस्तमाल कर रहे हैं।

<u>परमेश्वर के राज्य में हमारा निवेश</u>

> 10 परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार, जो मुझे दिया गया, मैं ने बुद्धिमान राजमिस्री की नाईं
> नेव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है; परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे, कि वह उस पर
> कैसा रद्दा रखता है। 11 क्योंकि उस नेव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है कोई दूसरी
> नेव नहीं डाल सकता। 12 और यदि कोई इस नेव पर सोना या चान्दी या बहुमोल पत्थर या काठ
> या घास या फूस का रद्दा रखता है। 13 तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन
> उसे बताएगा; इसलिये कि आग के साथ प्रगट होगा: और वह आग हर एक का काम परखेगी कि
> कैसा है। 14 जिस का काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पाएगा। (१ कुरिन्थियों
> ३:१०–१४)

दसवें पद में पौलुस कहता है कि हम में से हर अपने जीवनों से कुछ बना रहा है। वह हम में से हर एक को स्मरण दिलाता है कि हम चौकसी से निर्माण करें। परमेश्वर के राज्य में सारा परिश्रम मसीह के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध की नीव पर आधारित है। और दूसरे भलेकार्य केवल लकड़ी, भूसा और ठूँठ है। निर्माण सामग्री की

गुणवत्ता किए गए कार्यों के पीछे निर्धारित इरादों पर निर्भर है। इस बारे में कई सारी बातें महत्व्पूर्ण हैं, पहली यह कि मसीह के सामने हर विचार और हर कार्य प्रगट किया जाएगा:

> 17 कुछ छिपा नहीं, जो प्रगट न हो; और न कुछ गुप्त है, जो जाना न जाए, और प्रगट न हो। (लूका ८:१७)
> 13 और सृष्टि की कोई वस्तु उस से छिपी नहीं है वरन जिस से हमें काम है, उस की आंखों के साम्हने सब वस्तुएं खुली और बेपरदा हैं॥ (इब्रानियों ४:१३)

आगे जॉन बेवेर लिखते हैं:

बहुतों को गलतफ़हमी है कि उनका सारा भविष्य का न्याय उनके उद्धार के कारण हटा दिया गया है। सचमुच में यीशु का लहु हमें पापों से बचाता है, जो हमें राज्य से दूर कर सकते थे लिकिन यह हमें इस न्याय से नहीं बचाता कि हमने विश्वासी के रूप में कैसा आचरण रखा, भला या बुरा।

आखिर में सब कुछ प्रगट किया जाएगा। सब कुछ खोल दिया जाएगा। हम जीवन के महान रहस्यों को जान पाएँगे। कुछ भी छिपा नहीं रहेगा। हम केवल नकारात्मक रीति से न सोचें क्योंकि कई सारे करुणा के काम भी हैं जो हम में से बहुतों ने मनुष्यों के लिए गुप्त में किए हैं परन्तु परमेश्वर ने हमारे ह्रिदय की इच्छा और सोच को देखा है और सबके सामने उसका प्रतिफल देगा। कुछ ऐसे लोग भी होंगे जो जंगलों में किसी जगह चुपचाप से परिश्रम कर रहें हैं और उनका परिश्रम परमेश्वर के लिए बहुत ही मनभावन है। आप में से कुछ ने उदारता और बलिदान के साथ गरीबों के लिए दिया है और मनुष्य से गुप्त रखकर केवल परमेश्वर के लिए किया है।

> 18 ताकि लोग नहीं परन्तु तेरा पिता जो गुप्त में है, तुझे उपवासी जाने; इस दशा में तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा॥ (मत्ती ६:१८)

> 42 जो कोई इन छोटों में से एक को चेला जानकर केवल एक कटोरा ठंडा पानी पिलाए, मैं तुम से सच कहता हूं, वह किसी रीति से अपना प्रतिफल न खोएगा॥ (मत्ती १०:४२)

प्रभु ह चीज़ देखता है जो हमने कभी भी उसके लिए की है और उसकी नज़र से कुछ नही छिपता। वह दिन आएगा जब हम अपनी मीरास पाएँगे जो हमें समय के आरम्भ होने से पहले मसीह में दी गयी।

> 34 तब राजा अपनी दाहिनी ओर वालों से कहेगा, हे मेरे पिता के धन्य लोगों, आओ, उस राज्य के
> अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है। 35 क्योंकि मैं भूखा
> था, और तुम ने मुझे खाने को दिया; मैं प्यासा था, और तुम ने मुझे पानी पिलाया, मैं पर देशी था,
> तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया। 36 मैं नंगा था, तुम ने मुझे कपड़े पहिनाए; मैं बीमार था, तुम
> ने मेरी सुधि ली, मैं बन्दीगृह में था, तुम मुझ से मिलने आए। 37 तब धर्मी उस को उत्तर देंगे कि

हे प्रभु, हम ने कब तुझे भूखा देखा और खिलाया? या प्यासा देखा, और पिलाया?
38 हम ने कब तुझे पर देशी देखा और अपने घर में ठहराया या नंगा देखा, और कपड़े पहिनाए?
39 हम ने कब तुझे बीमार या बन्दीगृह में देखा और तुझ से मिलने आए?
40 तब राजा उन्हें उत्तर देगा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम ने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया। (मत्ती २५:३४–४०)

आप क्या समझते हैं कि इस बात का क्या अर्थ है जब यीशु कहता है, जो कुछ तुमने मेरे छोटे से छोटे भाईयों के साथ किया वह मेरे साथ किया। "सबसे छोटा कौन है"?

मुझे यह रोचक लगता है कि विश्वासी उन करुणा के कार्यों को भूल गए थे जो उन्होंने किए थे लेकिन परमेश्वर नहीं भूला। उसने दया के हर कार्य का लेखा रखा है और वह मसीह के न्याय सिंहासन पर सबके सामने प्रतिफल देगा। वह किस की ओर इशारा करता है जब वह कहता है छोटे से छोटे भाईयों? मैं समझता हूँ यह हमारे आस–पास के वे लोग हैं जिन पर कम ध्यान दिया जाता है। शायद से वे हैं जो खुद अपनी मदद नहीं कर सकते, जो बीमार हैं या जो बन्दिगृह में हैं। वह उनके बहुत नज़दीक है जो संसार की चीज़ों में गरीब है, जो हमारे लिए अजनबी है, जो "कामों के धम" के बन्धन में हैं। वह हम में से हर एक का इस्तेमाल करना चाहता है कि उन्हें स्वतंत्र करें, उनसे मिलने जाएँ, उन्हें खिलाँए – न सिर्फ़ रोटी और पानी परन्तु जीवन की रोटी भी। (यहुन्ना ६:३५)

मसीह की समानता में होने का पुरुस्कार

अनन्तकाल के लिए तैयारी केवल यहीं पृथ्वी पर हो सकती है क्योंकि मृत्यु के समय जो हमारा चरित्र रहता है हम उसके साथ अनन्तकाल में प्रवेश करते हैं। मेरा मानना है कि स्वर्ग में हमारा 'पद' या 'श्रेणी' इस बात पर निर्भर करती है कि पृथ्वी पर रहते हुए हमने कितना मसीह का दास स्वरूप अपने जीवन से दर्शाया। अनन्तकाल में आपके पुरुस्कार क पैमाना यह होगा कि किस हद तक मसीह के चरित्र की छाप आपके जीवन पर जो आपने पृथ्वी पर जिया है पड़ती है। 'केरेक्टर' शब्द सबसे पहले इस्तेमाल किया गया था छापे खाने में कागज़ पर पड़े अक्षर की छाप को दर्शाने को। परमेश्वर ने अलौकिक रीति से मसीह के स्वभाव और चरित्र के छाप आपके ह्रिदय में छोड़ी है ताकि दूसरे उसे पढ़ सकें।

18 परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश कर के बदलते जाते हैं॥ (२ कुरिन्थियों ३:१८)

जब हम मसीह के पास आते हैं तो हमारी आत्मा को परमेश्वर से अलग होने की मृत दशा से फिर से जीवित किया जाता है। (इफिसियों २:१,५) लेकिन फिर भी हमारे प्राण पर और काम किया जाना बाकी है – हमारे मन में, इच्छा में, विवेक में और भावनाओं में। परमेश्वर हमें अन्दर से नया बनाना और बदलना चाहता है जब हम उसके वचन पर मनन करते हैं और उसके आत्मा के प्रति आज्ञाकारी रहते हैं। चरवाहे के भजन में राजा दाऊद ने इसको भली–भाँति कहा, "वह मेरे जी में जी लाता है" (भजन संहिता २३:३) अपनी पहली पत्री में

पतरस ने लिखा, क्योंकि तुम अपने विश्वास का प्रतिफल, अपने प्राणों का उद्धार प्राप्त करते हो।" (१ पतरस १:९) हमारे मन, इच्छा और भावनाओं को परमेश्वर के आत्मा के अधिकार तले लाया जाना है। चरित्र हमारे विश्वास का लक्ष्य है। मसीह का कितना चरित्र हम में है उसके आधार पर हम प्रतिफल पाँएगें।

डिक्शनरी.कोम (Dictionary.com) चरित्र शब्द को इस तरह से समझाती है: "वह सब बातें जो किसी व्यक्ति या वस्तु के व्यक्तिगत स्वभाव की विशेषता और लक्षण बतातीं है।" हम अनुभव की गई हए घटना के द्वारा अपने प्राण और आत्मा में दिन–ब–दिन बदले जाते हैं। जीवन में हर बात हमारे चरित्र की परख है और जीवन के अन्याय के प्रति उसकी प्रतिक्रियाओं से मनुष्य के चरित्र को एकदम सही रीति से मापा जा सकता है। प्रतिष्ठा चरित्र नहीं है। प्रतिष्ठा वह है जो मनुष्य सोचता हैं कि आप हैं; चरित्र वह है जो परमेश्वर जानता है कि आप हैं। यदि हम हर परिस्तिति में जिसका हम सामना करता हैं मसीह के आत्मा के प्रति आज्ञयाकारिता में प्रत्युत्तर दें तो हम और अधिक मसीह के स्वरूप या समानता में बनाए जाते हैं। यदि आप मसीही हैं तो परमेश्वर द्वारा यह पहले से ही निर्धारित किया गया है कि आप यीशु मसीह को दर्शाने वाले जन बने।

> 28 और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये <u>सब बातें मिलकर</u> भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात उन्हीं के लिये जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।
> 29 क्योंकि जिन्हें उस ने पहिले से जान लिया है उन्हें <u>पहिले से ठहराया भी है</u> कि उसके <u>पुत्र के स्वरूप में हों</u> ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे। (रोमियो ८:२८–२९ – ज़ोर मैने दिया है)

३) अनन्तकाल की तैयारी के लिए आपके जीवन में परमेश्वर ने किन परिस्थितियों का इस्तेमाल किया है कि आपके चरित्र को बनाए और आकारित करे?

परमेश्वर आपको पहले से जानता था और उसने पहले से ठहराया कि आप उसके पुत्र के स्वरूप में हों। हम आसानी से इस भाग से गुज़र सकते हैं बिना इस बात की अनिवार्यता को समझते हुए कि आत्मा हमें क्या सिखाना चाहता है। हमारे जीवनों की राह में जो दुर्घटनाँए हुईं हैं उनके लिए हम परमेश्वर को दोष नहीं दे सकते। कई बार यह बातें हमारे अपने ही चुनावों के कारण हुई हैं। जो परमेश्वर कहता है वह यह है कि हर परिस्थिति को हमारे जीवन में भलाई के लिए इस्तेमाल करेगा यदि हम उसकी शिक्षा और उसके आत्मा की अगुवाई के लिए तैयार रहेंगे। सबसे अच्छी बात यह है कि परमेश्वर ने आरंभ से ही अनन्त को देख लिया है। संसार की सृष्टि से पहले ही हम में से हर एक उसके ह्रिदय में थे। वह आपको पहले से जानता था और उसने पहले से ठहराया कि आप उसके पुत्र की समानता में बनाए और आकारित किए जाँए। "और मेरे सब अंग जो दिन दिन बनते जाते थे वे रचे जाने से पहिले तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे।" (भजन संहिता १३९:१६) मेसेज बाईबिल में इस पद का अनुवाद इस प्रकार से है, " एक खुली पुस्तक के समान तूने मुझे गर्भ से जन्म तक बढ़ते हुए देखा; मेरे जीवन के सारे चरण तेरे सामने खुले पड़े थे, मेरे जीवन के हर दिन तैयार थे, इससे पहले कि मैं उनमें से एक भी जीता"। संसार में परमेश्वर का कार्य आपको अनन्तकाल के लिए तैयार करना है।

"पृथ्वी पर चरित्र आनवाले संसार में एक अनन्तकाल सम्पत्ति साबित होगा" (जे. सी. रायल)। यदि आप परमेश्वर की दृष्टि में बड़ा बनना चाहते हैं, तो आप अपने रास्ते में आनेवाली मुश्किल परिस्थितियों का

सामना कैसे कर रहें हैं? क्या आप अपने परमेश्वर से मिलने के लिए इच्छुक और तैयार हैं? उस दिन आप में उसका चरित्र किस हद तक प्रतिबिंबित होगा?

कुछ साल पहले मैंने स्टीवन कौवी की प्रसिद्ध पुस्तक "सैवन हैबिट्स ऑफ़ हाईली एफ़ेक्टिव पीपल" (7 Habbits of Highly Effective People) असरदार लोगों की एक बहुत खास आदत है अंत को ध्यान में रखकर शुरू करना। आप क्या चाहते हैं कि आपके जीवन का परिणाम क्या हो? आप क्या चाहते हैं कि यीशु आपके लिए उस दिन कहे जब आप उसके सम्मुख खड़े होंगें। वह बहुतों से कहेगा, "शाबाश, मेरे भले और विश्वासयोग्य दास", पर आप क्या चाहते हैं कि वह किसलिए ऐसा कहे? यदि आप एक असरदार जीवन चाहतें हैं और संसार को बेहतर छोड़ कर जाना चाहते हैं तब यह बुद्धिमानी होगी कि आप ठहर जाँए और अपने आप से पूछें कि आप अपने जीवन से क्या फ़र्क ला रहे हैं? क्या यह भिन्नता केवल इसी जीवन भर के लिए है या फिर यह अनन्तकालीन है? क्या आप अपनी योग्यताओं, समय, शक्ति या धन के लिए अस्थायी ईनाम के लिए परिश्रम करते हैं या फिर अनन्तकालीन प्रतिफल के लिए? “19 अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। 20 परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं। ”(मत्ती ६:१९–२०)

४) आप क्या सोचते हैं कि आप कौन सी चीज़ें इकट्ठा कर सकते हैं और अपने साथ स्वर्ग ले जा सकते हैं?

मैं पक्के तौर पर कह सकता हूँ कि यह संपूर्ण सूची नहीं है, लेकिन तीन बातें है जो ध्यान में आती हैं।

१) दूसरे लोग, जिनकी मदद हमने अपने जीवन की राह में की है।
२) जो बातें हमने सीखी हैं, उद्धाहरण के लिए, परमेश्वर का वचन जिसकी छाप हमारे ह्रिदय पर पड़ी है।
३) मसीह का चरित्र जिसकी छाप हमारी आत्मा पर डाली गई है।

<u>आत्मिक निवेश</u>

अब इस बात पर फिर से लौटें कि हम अपने समय, शक्ति, वरदानों और पैसों का क्या कर रहे हैं। एक रूचिकर दृष्टान्त है जो यीशु लूका १९:११–२७ में सिखाते हैं।यह कहानी एक धनी व्यक्ति के विषय में है जो राज्य पाने के लिए दूर देशों को जाता है। यह जानते हुए कि उसे लौटने में समय लगेगा वह अपने दस दासों में से हर एक को एक मीना देता है, जो एक मज़दूर के तीन महीने की मज़दूरी के बराबर थी। वह उनमें से हर एक को कार्य करने को कहता है, उन मुहरों को तब व्यवसाय में लगाने को कहता है जब तक वह लौट कर न आए। "पैसे को कार्य में लगाना" (NIV) या "व्यस्त रखना" (KJV) इस वाक्यांश को जिस युनानी शब्द से समझाया गया है वह है प्रेगमैटियूमाए इसका अर्थ है व्यवसाय करना, निवेश करना या लेनदेन करना इस सोच के साथ कि जो किया जा रहा है उस पर लाभ मिले। यह रूचिकर है कि हमें इस युनानी शब्द से

प्रेगमैटिक शब्द मिलता है। प्रेगमैटिक का अर्थ है कि किसी चीज़ के साथ समझदारी और वास्तविकता में पेश आँए। हमें बैठकर सोचना चाहिए कि हम किस प्रकार अपने संसाधनों का उचित रीति से प्रयोग करें ताकि परमेश्वर के राज्य के लिए हमें अत्याधिक लाभ मिल सके।

अपने, कुलीन वंशिय राजा यीशु का चरित्र जानते हुए हमें उन बातों के लिए परिश्रम करना और उन ही में निवेश करना चाहिए जो उसके ह्रिदय में हैं। जिस बात की वह सबसे अधिक परवाह करता है वे हैं लोग– हमारे पास लोगों के लिए ह्रिदय होना चाहिए, यदि हम सोने, चाँदी या कीमती पत्थरों से बनाना चाहते हैं। दृष्टान्त में, पहले भंडारी ने जमा–पूँजी निवेश करी और स्वामी के पैसे को कार्य में लाया और अपने एक मीना के बदले में दस कमाए। भंडारी के लिए धनी व्यक्ति का प्रत्युत्तर यह था कि उन के साथ–साथ उसने उसे दस शहर भी ईनाम स्वरूप दे दिए। निवेश की गई राशी और पारीश्रमिक के बीच एक बड़ा अन्तर।

व्यक्तिगत तौर पर मैं समझता हूँ कि शहर अन्योक्ति है यह समझने के लिए कि जो कुछ हम इस पापी संसार में मसीह के लिए करते है, जो हम निवश करते है और जो अद्‌भुत पुरुस्कार वह हमें उस दिन देगा, बहुत बड़ा अन्तर होगा। मैं नहीं जानता कि ईनाम क्या होगा लेकिन मैं पता लगाने के लिए इन्तज़ार कर सकता हूँ। हमारे कुलीन वंशिय स्वामी के लिए आपका और मेरा कर्त्तव्य है कि हम अपना चरित्र, अपना समय, शक्ति और संसाधन उसके राज्य में लगा दें। मसीही जन होने के नाते हम इस संसार में अजनबी और मुसाफ़िर हैं।

दोबारा, यदि आपने अपना भरोसा मसीह पर रखा है और उसमें सचमुच विश्वास किया है तो आप अनन्त राज्य में प्रेवेश करेंगे। परमेश्वर के राज्य में आपका स्थान आपके कार्यों पर निर्भर नही करता, लिकिन वे जो सचमुच विशवास करते हैं कि आगे अनन्त जीवन है, क्यों नहीं जब उनके पास समय है तो वह संसाधनों का इस्तेमाल उन लोगों तक पहुँचने के लिए करते जिन तक वह चाहता है कि हम जाँए?

<u>प्रार्थना</u>: पिता, ऐसा होने दे कि हम इस बात को जाने कि हर एक दिन अनन्तकाल की तैयारी के लिए है। हमारी मदद कर कि हम अपने आप को उन मार्गों के लिए खुला रखें जिनसे तू हमें ले जाना चाहता है और उस दिन के लिए तैयार करना चाहता है। उस दिन के आने तक हमारी देखभाल करने के लिए तेरा धन्यवाद। आमीन॥

– कीथ थॉमस